यमदीपदान

धनतेरस (धन त्रयोदशी) के दिन यमदीपदान

धनतेरस के दिन यम-दीपदान जरूर करना चाहिए। ऐसा करने से अकाल मृत्यु का भय समाप्त होता है। पूरे वर्ष में एक मात्र यही वह दिन है, जब मृत्यु के देवता यमराज की पूजा सिर्फ दीपदान करके की जाती है। कुछ लोग नरक चतुर्दशी के दिन भी दीपदान करते हैं।

स्कंदपुराण में लिखा है

कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे ।
यमदीपं बहिर्दद्यात् अपमृत्युर्विनिश्यति ।।

अर्थात कार्तिक मासके कृष्णपक्ष की त्रयोदशीके दिन सायंकाल में घर के बाहर यमदेव के उद्देश्य से दीप रखने से अपमृत्यु का निवारण होता है ।

पद्मपुराण उत्तरखण्ड अध्याय १२२ में लिखा है

कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां तु पावके।
यमदीपं बहिर्दद्यात् अपमृत्युर्विनिश्यति।।

कार्तिक के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को घर से बाहर यमराज के लिए दीप देना चाहिए इससे दुरमृत्यु का नाश होता है।

नारदपुराण पूर्वार्ध अध्याय १२२ के अनुसार

ऊर्ज्जकृष्णत्रयोदश्यामेकभक्तः समाहितः ।
प्रदोषे तैलदीपं तु प्रज्वाल्याभ्यर्च्य यत्नतः ।।
गृहद्वारे बहिर्दद्याद्यमो मे प्रीयतामिति ।
एवं कृते तु विप्रेंद्र यमपीडा न जायते ।।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को एकाग्रचित हो एक समय भोजन का व्रत करे। प्रदोषकाल में तेल का दीपक जलाकर उसकी यत्नपूर्वक पूजा करे और घर के द्वार पर बाहर के भाग में उस दीपक को इस उद्देश्य से रखे कि उसके दान से यमराज मुझपर प्रसन्न हों। ऐसा करने से मनुष्य को यमराज की पीड़ा नहीं होती।

यम-दीपदान सरल विधि

यमदीपदान प्रदोषकाल में करना चाहिए । इसके लिए आटे का एक बड़ा दीपक लें। गेहूं के आटे से बने दीप में तमोगुणी ऊर्जा तरंगे एवं आपतत्त्वात्मक तमोगुणी तरंगे (अपमृत्यु के लिए ये तरंगे कारणभूत होती हैं) को शांत करने की क्षमता रहती है । तदुपरान्त स्वच्छ रुई लेकर दो लम्बी बत्तियॉ बना लें । उन्हें दीपक में एक -दूसरे पर आड़ी इस प्रकार रखें कि दीपक के बाहर बत्तियों के चार मुँह दिखाई दें । अब उसे तिल के तेल से भर दें और साथ ही उसमें कुछ काले तिल भी डाल दें । प्रदोषकाल में इस प्रकार तैयार किए गए दीपक का रोली , अक्षत एवं पुष्प

से पूजन करें । उसके पश्चात् घर के मुख्य दरवाजे के बाहर थोड़ी -सी खील अथवा गेहूँ से ढेरी बनाकर उसके ऊपर दीपक को रखना है । दीपक को रखने से पहले प्रज्वलित कर लें और दक्षिण दिशा (दक्षिण दिशा यम तरंगोंके लिए पोषक होती है अर्थात दक्षिण दिशा से यमतरंगें अधिक मात्रामें आकृष्ट एवं प्रक्षेपित होती हैं) की ओर देखते हुए चार मुँह के दीपक को खील आदि की ढेरी के ऊपर रख दें। दीपक रखते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें:

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम।।

इसका अर्थ है, धनत्रयोदशी पर यह दीप मैं सूर्यपुत्र को अर्थात् यमदेवता को अर्पित करता हूं । मृत्युके पाश से वे मुझे मुक्त करें और मेरा कल्याण करें ।
उक्त मन्त्र के उच्चारण के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए यमदेव को दक्षिण दिशा में नमस्कार करें ।

ॐ यमदेवाय नमः । नमस्कारं समर्पयामि ॥

अब पुष्प दीपक के समीप छोड़ दें और पुनः हाथ में एक बताशा लें तथा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे दीपक के समीप ही छोड़ दें ।

ॐ यमदेवाय नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ॥

अब हाथ में थोड़ा -सा जल लेकर आचमन के निमित्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक के समीप छोड़े ।

ॐ यमदेवाय नमः । आचमनार्थे जलं समर्पयामि ।

अब पुनः यमदेव को 'ॐ यमदेवाय नमः' कहते हुए दक्षिण दिशा में नमस्कार करें ।

परम्परागत रूप से कुछ लोग यमदीपदान में 13 दीपक प्रज्वलित करते हैं जिनका शास्त्रीय विधान हम नहीं ढूँढ पाये परन्तु कुलाचार का पालन सभी का प्रथम कर्त्तव्य है अतः वो सभी उसी प्रकार पूजन करें जिस प्रकार उनके पूर्वज करते आये हैं।